- Dr. B. Kr

जैविक प्रेरक
(Biogenic motive)

जैविक प्रेरक को शारीरिक, प्राथमिक अथवा जन्मजात प्रेरक कहा जाता है। जैविक प्रेरक कई प्रकार के हैं-

① भूख- यह व्यक्ति कि प्राथमिक आवश्यकताओं में से सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। हमें अपने दैनिक जीवन के कार्यों को समपादन करने के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है जो हमें भोजन से प्राप्त होता है।
स्थानीय उत्तेजना सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति को भूख का अनुभव तब होता है जब उसके अमाशय में सिकुड़न होता है।

परंतु भूख की व्याख्या केन्द्रीय सिद्धांत द्वारा बेहतर किया गया है इस सिद्धांत के अनुसार हाईपोथैलेमस में ऐसे केन्द्र हैं जो भूख को नियंत्रित करते हैं। भूख को नियंत्रित करने में शारीरिक ताप, हार्मोन, वातावरण आदि का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है।
Ex - स्वादिष्ट भोजन का सुगंध ~~देखकर~~ भूख ~~सैंधे~~ का संवेदना होते पर भूख लगना।

② प्यास - प्यास एक जैविक प्रेरक है जो भूख की अपेक्षा अधिक प्रबल है। स्थानीय उत्तेजना सिद्धांत के अनुसार जब हमारे शरीर में पानी की कमी हो जाती है तो मुँह और कण्ठ सूख जाते हैं, जब हम पानी पीते हैं तो प्यास खत्म हो जाती है। प्यास के लिए भी केन्द्रीय सिद्धांत का कहना है कि इसके लिए हाइपोथैलमस की भूमिका महत्वपूर्ण है।

③ यौन - यौन एक जैविक प्रेरक है लेकिन यह भूख तथा प्यास से बिल्कुल भिन्न है। जीवन को कायम रखने के लिए भूख तथा प्यास की तरह यौन की संतुष्टि आवश्यक नहीं है।
यौन-व्यवहार के लिए ग्रंथि का योगदान भी महत्वपूर्ण है, जिसमें पियूष ग्रंथि के अन्तस्राव के प्रभाव से स्त्री अण्डाशय में दो प्रकार के अन्तःस्राव उत्पन्न होते हैं, जिन्हें एस्ट्रोजेन तथा प्रोजेस्टेरोन कहते हैं। इसी तरह पुरुष में टेस्टोस्टेरोन तथा ऐण्ड्रोस्टेरोन नामक अन्तःस्राव उत्पन्न होते हैं। उपरोक्त अन्तस्रावी ग्रंथि का कम या अधिकता कम होने का प्रभाव यौन व्यवहार पर पड़ता है।